'सबला' के पुरुष पाठकों के नाम एक पत्र

प्रिय मित्रो,

'सबला' तो आप कई महीनों/सालों से पढ़ रहे हैं पर आपसे मुखातिब होकर सीधी बात करने का यह पहला मौका है।

इस अंक से हम 'सबला' में एक नये स्तंभ की शुरुआत कर रहे हैं, इसमें पुरुषों से बातचीत होगी, पुरुषों के विचार छापे जाएंगे। उन पुरुष समूहों की रिपोर्ताज होंगी जो समाज में स्त्रियों की भूमिका, स्थिति सुधारने की कोशिश कर रहे हैं।

हमारा अंदाजा है कि 'सबला' पढ़ने वालों में आधे से अधिक पुरुष हैं। 'सबला' की कई हज़ार प्रतियां जन शिक्षण निलियमों में जाती हैं, जिन में अधिकतर कार्यकर्ता और सदस्य पुरुष हैं। बहुत से पुरुष अध्यापक, ग्राम सेवक, स्वयं-सेवी संस्थाओं के पुरुष कार्यकर्ता भी 'सबला' पढ़ते हैं। हमें इस बात की बहुत खुशी है कि आप सब 'सबला' पढ़ते हैं। आपको तथाकथित "महिलाओं की समस्याओं" में रुचि है। हमारा मानना है कि विचारशील, संजीदा पुरुषों का नारी आंदोलन को समझना, उसमें सहायता करना और उसके साथ जुड़ना बहुत ज़रूरी है।

सच तो यह है कि औरतों की सभी समस्याएं, सामाजिक समस्याएं हैं, यानि वे सभी, स्त्री और पुरुषों की सांझी समस्याएं हैं। उन्हें केवल स्त्रियों की समस्या मानना ग़लत है। अगर औरतों पर बलात्कार होते हैं, उन्हें घरों में पीटा जाता है, उनके साथ सड़कों पर, दफ्तरों में, फैक्टरियों में छेड़खानी होती है तो इसमें क्या पुरुषों की भूमिका नहीं है? अगर हमारे घरों में लड़कियों की पैदाइश पर मातम छा जाता है, लड़कियों को पैतृक संपत्ति नहीं दी जाती, उन्हें पढ़ने लिखने का पूरा मौका नहीं दिया जाता, इस सब में क्या पुरुषों का हाथ नहीं है? इस सब का असर क्या हमारे परिवार और समाज पर नहीं पड़ता?

समस्या स्त्रियों की नहीं है। समस्या है स्त्री-पुरुष संबंधों में मौजूद ऊंच-नीच, गैर-बराबरी की।

पितृ-सत्तात्मक समाज

हमारा समाज पितृ-सत्तात्मक है। परिवार, धर्म, शिक्षा, क़ानून, राजनीति, राजसत्ता सब में पुरुष हावी हैं। सारे ढांचे पुरुषों के आधीन हैं और विचारधारा भी पितृ-सत्तात्मक है। हमारा समाज यह मानता है कि पुरुष स्त्री से ऊंचा व उत्तम है, वह स्त्री का मालिक, पति, स्वामी है। स्त्रियों को हमेशा पुरुषों के आधीन व उनके नियंत्रण में रहना चाहिए। यह विचारधारा स्त्रियों को पुरुषों की संपत्ति का ही हिस्सा मानती हैं। यहां तक कि स्त्री के शरीर पर भी पुरुषों का हक़ माना जाता है।

इस विचारधारा को पनपाने में पुरुषों और स्त्रियों, दोनों का हाथ है। यानि समस्या सिर्फ औरतों की नहीं है और बदलाव सिर्फ़ औरतों को बदलने से नहीं आ सकता। स्त्रियों की हालत तभी सुधर सकती है जब पितृसत्ता बदले, जब समाज की

धारणाएं बदलें, और ये तभी बदलेंगे जब स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियां सबके विचार, व्यवहार, अधिकार,कर्त्तव्य और परिभाषाएं बदलेंगी।

मर्दों को बदलो

गांव की औरतें भी हमेशा हमें यही कहती हैं—"बहन जी हम तो आपकी बात समझती हैं पर आप हमारे मर्दों को समझाओ। उनको समझाए बिना कुछ नहीं हो सकता।" गांव की एक बहन बोली—"ये आपके गीतों वाला कैसेट मेरे मरद के रेडियों में लगाओ। जब तक उसके भेजे में बात नहीं बैठेगी, तब तक बड़ी मुश्किल है।"

एक और बहन ने कहा—"गांव के पंडितों से कहो लड़की की पैदाइश पर थाली बजाने को कहें, अंतिम संस्कार करने का हक़ लड़कियों को भी दें।"

इन सब बहनों की बात वाजिब है। औरत और मर्द एक तराजू के दो पलड़े हैं। एक पलड़े में हलचल होगी तो दूसरा अपने आप हिलेगा, उसमें ऊंच-नीच होगी। कई लोग औरतों के काम के बोझ को कम करने की बात कहते हैं। यह बोझ तभी कम होगा जब घर के मर्द थोड़ा बोझ और सहने को तैयार होंगे। औरतों के अधिकार तभी बढ़ेंगे जब औरों के कुछ कम होंगे। अगर दोनों राज़ी से बदलाव लाएं तो परिवार में क्लेश कम होगा पर अगर पुरुष बदलने से इंकार करें और औरतें बदलाव चाहें तो झगड़ा होगा ही। इसीलिए यह ज़रूरी है कि स्त्री-पुरुष संबंधों पर पुरुषों से भी बातचीत हो।

पुरुषों की भूमिका

हमारा यह भी मानना है कि पुरुषों के साथ इस प्रकार की बातचीत अगर कुछ समझदार और संवेदनशील पुरुष करें तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। पुरुष एक दूसरे के साथ ज्यादा खुल कर बातचीत कर सकते हैं। अगर एक पुरुष दूसरे को समझाएगा तो शायद उनको बात ज़्यादा अच्छी तरह समझ में आएगी।

आज जगह-जगह महिला मंडल, महिला समूह बन रहे हैं जहां औरतें मिल कर अपनी समस्याओं पर बातचीत करती हैं। इसी तरह के पुरुष समूहों की ज़रूरत है जिनमें पुरुष पितृसत्ता पर विचार करें, अपने अधिकारों, ज़िम्मेदारियों, विचारधारा, अपने व्यवहार पर बातचीत करें। इस प्रकार के पुरुष समूह ऐसे पुरुषों पर दबाव डालें जो अपनी पत्नी के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, या और औरतों के साथ बदतमीजी, छेड़खानी या किसी और प्रकार का बुरा व्यवहार करते हैं। जब तक मर्दों की तरफ से इस तरह की पहल नहीं होगी, स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव जल्दी नहीं आएगा और कटुता भी ज़्यादा होगी।

हमें यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि बंबई में कुछ पुरुषों ने पहल की है एक ऐसा पुरुष समूह बनाने की जो औरतों पर होने वाली हिंसा के खिलाफ़ काम कर रहा है। हम 'सबला' के अगले अंक में इस समूह के बारे में और जानकारी देंगे।

हमारे सभी पुरुष पाठकों को हम निमंत्रण दे रहे हैं स्त्री-पुरुष समस्याओं, संबंधों पर अपने विचार लिख कर भेजने का। इस पत्र का भी जवाब दें ताकि हम आप के विचार जानें। अगर हो सके तो हम सब मिल कर एक ऐसे समाज की रचना कर सकें जहां स्त्री-पुरुष दोनों इज्ज़त से जी सकें, पनप सकें, जहां इंसाफ हो।

शुभकामनाओं सहित

कमला भसीन